अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : छठी – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 06 जनवरी, 2019)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	24	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) एकेन्द्रिय मोहनीय कर्म का बंध करता है-

(क) 1 सागर (ख) 25 सागर

(ग) 50 सागर (घ) 1000 सागर ( )

(b) बिना मन वाला जीव मोहनीय कर्म का उत्कृष्ट बंध करता है-

(क) 70 कोटाकोटी सागर (ख) 1000 सागर

(ग) 100 सागर (घ) 50 सागर ( )

(c) बादर तेउकाय पर्याप्त में उपयोग होते हैं-

(क) 5 (ख) 4

(ग) 3 (घ) 6 ( )

(d) सातवीं नरक का उत्कृष्ट विरह होता है-

(क) 6 माह (ख) 12 मुहूर्त्त

(ग) 4 माह (घ) 1 माह ( )

(e) संख्यात माह का विरह होता है-

(क) 12वाँ देवलोक (ख) 4 अनुत्तर विमान

(ग) 10वाँ देवलोक (घ) पहली नरक ( )

(f) विरह द्वार के समान क्या जानना चाहिए-

(क) अपर्वतन (ख) उद्वर्तन

(ग) उदीरणा (घ) संक्रमण ( )

(g) उत्कृष्ट कितने मुहूर्त्त तक कोई जीव एक गति से दूसरी गति में उत्पन्न नहीं होता है-

(क) 4 मुहूर्त्त (ख) 8 मुहूर्त्त

(ग) 10 मुहूर्त्त (घ) 12 मुहूर्त्त ( )

(h) दिसाणुवाइ का थोकड़ा चलता है-

(क) पन्नवणा पद-4 (ख) पन्नवणा पद-3

(ग) पन्नवणा पद-7 (घ) पन्नवणा पद-2 ( )

(i) जीवों की उत्पत्ति स्थान को कहते हैं-

(क) योनि (ख) उपपात

(ग) मरण (घ) च्यवन ( )

(j) बेइन्द्रिय की स्थिति होती है-

(क) 6 माह (ख) 12 वर्ष

(ग) 49 अहोरात्रि (घ) 16 वर्ष ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1 = (10)

(a) पुरुषवेद की 12 कोटाकोटी सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति होती है। ( )

(b) जघन्य स्थिति बंध क्षपक श्रेणी में ही होता है। ( )

(c) नौवें देवलोक के देवों से सातवीं नरक के नेरइये कम होते हैं। ( )

(d) सभी देवों से देवियाँ अधिक है। ( )

(e) मनुष्य की 12 लाख कुल कोड़ी होती है। ( )

(f) बलदेव का जघन्य विरह 2,53,000 वर्षो का होता है। ( )

(g) तेइन्द्रिय जीव अंतराय कर्म का उत्कृष्ट बंध 50 सागर का 3/7 भाग करता है। ( )

(h) बादर निगोद के पर्याप्ता से बादर तेउकाय के अपर्याप्ता अधिक नहीं है। ( )

(i) पहली नारकी के जीव 7वीं नारकी की अपेक्षा अधिक है। ( )

(j) मानसरोवर झील संख्यात करोड़ योजन लम्बी चौड़ी है। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(a)	आतप	(क) 24 मुहूर्त्त	.....
(b)	सूक्ष्मत्रिक	(ख) 6 आवलिका	.....
(c)	सिद्धों का विरह	(ग) 10 कोटाकोटी सागरोपम	.....
(d)	सम्मूर्च्छिम मनुष्य	(घ) 20 कोटाकोटी सागरोपम	.....
(e)	33 सागरोपम	(च) 12 लाख	.....
(f)	40 कोटाकोटी सागरोपम	(छ) मच्छ	.....
(g)	एक हजार योजन	(ज) 18 कोटाकोटी सागरोपम	.....
(h)	पृथ्वीकाय	(झ) भगवती सूत्र शतक12 उद्देशक 6	.....
(i)	ग्रहण का विरह	(य) संज्वलन कषाय	.....
(j)	पुरुषवेद	(र) 6 माह	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- 10x1 = (10)

(a) मेरी स्थिति उत्कृष्ट 70 कोटाकोटि सागरोपम की होती है। .....

(b) मेरी स्थिति 2 समय की है। .....

(c) मैं एक ऐसी श्रेणी हूँ, जिसका उत्कृष्ट विरह पृथक्त्व वर्ष का होता है। .....

(d) मेरा नाम जंगमकाय है। .....

(e) मैं सूई की नोक जैसे संस्थान वाला हूँ। .....

(f) उत्तर दिशा में मेरे 3,66,00,000 भवन हैं। .....

(g) मेरा दूसरा नाम विमला है। .....

(h) मेरी आयु 1000 वर्ष की थी। .....

(i) हमारा विरह नहीं पड़ता है। .....

(j) मेरा बोल क्रमांक संख्या 51 है। .....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **12x2 = (24)**

(a) कौनसे परिणाम में आयु बंध नहीं होता ?

.....

.....

.....

(b) 18 कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति वाली प्रकृतियों का नाम लिखिए।

.....

.....

.....

(c) सातावेदनीय का एकेन्द्रिय जघन्य व उत्कृष्ट कितना बंध करता है ?

.....

.....

.....

(d) ऐसी प्रकृतियों के नाम लिखिए जिनकी जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति एक समान है।

.....

.....

.....

(e) आयुकर्म को छोड़कर शेष सात कर्मों में एकेन्द्रिय से असन्नी पंचेन्द्रिय तक जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति बन्ध में कितना अन्तर रहता है ?

.....

.....

.....

(f) संज्ञी पंचेन्द्रिय के मिश्र व सम्यक्त्व मोहनीय का उदयकाल कितना है ?

.....

.....

.....

(g) नरकायु का असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय कितना बंध करता है ?

.....

.....

.....

(h) नौवे देवलोक में जीव का भेद, गुणस्थान, योग, उपयोग, लेश्या लिखिए।

.....

.....

.....

(i) 98 बोलों में से 33 एवं 34वें नम्बर का बोल लिखिए।

.....

.....

.....

(j) 98 बोलों में से बोल संख्या 50,60,72 व 73 को लिखिए।

.....

.....

.....

(k) विरह को परिभाषित करते हुए नवीन श्रावक का विरह लिखिए।

.....

.....

.....

(l) 98 बोलों में अभवी का कौनसे नम्बर का बोल है ? इनमें गुणस्थान, योग, उपयोग व लेश्या लिखिए।

.....

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - 12x3 = (36)

(a) अबाधाकाल को परिभाषित करते हुए कर्म-बंध का सामान्य नियम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(b) 10 कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति वाली कोई भी 12 प्रकृतियों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(c) आतप, ज्ञानावरणीय और यशकीर्ति का एकेन्द्रिय जीव जघन्य-उत्कृष्ट कितना बंध करता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

(d) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय नरकगति, नरकायु का जघन्य-उत्कृष्ट कितना बंध करता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

(e) 6 संहननों की उत्कृष्ट स्थिति व अबाधाकाल लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(f) ''एक भव में दो आयु का उदय नहीं होता'' इसको आगमिक आधार सहित स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(g) चार अनुत्तर विमान का विरह स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(h) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में शाश्वत क्यों नहीं होते ? स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(i) **98 बोलों में से 93 से 96 तक के बोल क्रमांक लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(j) **98 बोलों में से 11 से 16 बोल क्रमांक का नाम लिखते हुए मात्र उनका अल्पबहुत्व लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(k) **बादर निगोद पर्याप्त से बादर तेउकाय अपर्याप्त तक के बोलों में जीव का भेद, गुणस्थान, योग, उपयोग व लेश्या लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(l) **भाव दिशा के 18 भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....